P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-10* June- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय चित्रकला के इतिहास में पुनःरुत्थान काल का विश्लेषणात्मक अध्ययन

आभा गुप्ता
शोध छात्रा,
पेंटिंग विभाग,
म.गॉ.चि.ग्रा.वि.वि.
चित्रकूट

सारांश

पुर्नजागरण की कला अथवा पुनःरूत्थान की कला शैली के नाम से मूर्त रूप ग्रहण किया । इसका उद्‌गम स्थल बंगाल था । कला के इतिहास में इसे 'बंगाल स्कूल' की संज्ञा दी गयी ।

कला के क्षेत्र में भारत की नई पहचान का प्रयास किया ब्रितानी कलाविद् ई0 बी हैवेल ने किया वे सन् 1864 में कलकत्ता स्कूल ऑफ आर्ट्स के प्रिन्सिपल बनकर आये थे । अपने अध्ययनशील व्यक्तित्व के कारण उन्होनें भारतीय कला परम्परा की श्रेष्ठता को पहचाना और साहस के साथ कहा कि ब्रितानी शैली पर दी जा रही कला शिक्षा भारतीयों की वास्तविक सृजन–प्रतिभा को कदापि विकसित नहीं कर सकती । अतः इसमें आमूल परिवर्तन किया जाना चाहिये ।

पुनःरूत्थान अथवा पुनर्जागरण काल के प्रमुख चित्रकार थे– अवनीन्द्रनाथ ठाकुर, गगनेन्द्रनाथ ठाकुर, नन्दलाल बसु, असित कुमार हल्दार, क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार, देवी प्रसाद राय चौधरी, जामिनी राय, अब्दुर्रहमान चुगताई, ईश्वरी प्रसाद, शैलेन्द्रनाथ डे और शारदा उकील आदि अवनीन्द्रनाथ ठाकुर इन सबकी प्रेरणा के प्रमुख केन्द्र थे ।

अवनीन्द्रनाथ ठाकुर, ई0बी0 हैवेल के आग्रह पर कलकत्ता स्कूल ऑफ आर्ट्स में आये । पहले वहाँ पर आचार्य बने फिर वहाँ के प्रधानाचार्य । उक्त पद पर कार्य करते हुये उन्होनें अपने शिष्यों, चित्रकार साथियों तथा कला क्षेत्र के सभी लोगों से यह आग्रह किया कि वे भारतीय कला परम्परा का अध्ययन करके उसे आत्मसात करें तथा अपने सृजन में मौलिक भारतीय तत्वों का समावेश करें।

अवनीन्द्रनाथ नें परम्परागत भारतीय चित्र पद्धतियों तथा अजंता, पहाड़ी राजपूत आदि कला शैलियों तथा सिद्धान्तों का तो अध्ययन किया ही, साथ ही भारतीय रंगों तथा तकनीक पर भी पर्याप्त ध्यान देकर अपनी एक नई समन्वयात्मक कला शैली का विकास किया । अद्युनातन आग्रह से युक्त उनकी कला शैली नें भारत में एक नये युग का सूत्रपात किया ।

मुख्य शब्द : पुनःरूत्थान शैली, बंगाल शैली, वाश पद्धति, बंगाल स्कूल, ई0वी0 हैवल, अवनीन्द्रनाथ टैगोर, भारतीय कला ।

प्रस्तावना

19वीं शताब्दी का युग ऐसा था जिसमें कला नें शास्त्रीयता के दायरे में बाहर आकर आधुनिक युग में पदार्पण किया जिसके परिणामस्वरूप प्रत्येक कलाकार विचारक, लेखक, समाज सुधारक, राजनीतिज्ञ आदि की सोच में परिवर्तित हुये। इस आधुनिक युग की पृष्ठभूमि बंगाल स्कूल से प्रारम्भ होती है ।

ई0 वी0 हैवेल के अनुसार

''इस फैलती हुयी मानसिक और शासन सम्बन्धी के पीछे भारत में अब भी प्राचीन भारतीय संस्कृति पर आधारित कला की एक जीवित और मौलिक परम्परा है, जो यूरोप की आधुनिक अकादमियों और कला संस्थानों के संचित ज्ञान की अपेक्षा अधिक सम्पन्न और शक्तिमती है । यह परम्परा केवल उस अध्यात्मिक प्रबोद्य की प्रतीक्षा कर रही है, जिससे कि उसकी पुरानी सृजनशील प्रवृत्तियाँ जाग्रत हो उठें ।'' और यह प्रवृत्ति जाग्रत हुयी बंगाल के अन्तर्गत ।

सन् 1854 ई0 में राजेन्द्र लाल मिश्र तथा यतीन्द्र मोहन आदि नें उद्योग कला संस्था की स्थापना की, जो उद्योग कला का स्कूल चलाती थी, जिसे आगे चलकर कलकत्ता के सरकारी स्कूल में परिवर्तित कर दिया गया ।

इस शैली के विभिन्न कलाकार विभिन्न स्थानों पर जाकर इस शैली को पूरे भारत में प्रचारित व प्रसारित किया ।

आचार्य नन्द लाल बोस (शांति निकेतन, कलकत्ता) क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार (इलाहाबाद) वैंकटम्पा (मैसूर) देवी प्रसाद चौधरी (मद्रास) पुलिन बिहारी दत्त (बम्बई) मुकुल डे, मनीष डे एवं शारदा उकील (दिल्ली) शैलेन्द्रनाथ डे (जयपुर) समरेन्द्रनाथ गुप्त (लाहौर) सुधीर रंजन खास्तगीर (लखनऊ) आदि नें उक्त स्थानों के कला शिक्षालयों पर पहुँचकर भारतीय कला एवं संस्कृति की नई परम्पराओं का सूत्रपात किया और उसे बल प्रदान किया ।

कला समीक्षक आनन्द कुमार स्वामी नें भारतीय कला की शोध और विकास का महत् कार्य अपने हाथ में लिया था ।

सन् 1913 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'कला और स्वदेशी में कला विद्यालयों से सम्बद्ध अध्याय में उन्होनें जो कुछ लिखा, उसे तत्कालीन कला आन्दोलन के घोषणा–पत्र क रूप में स्वीकार किया गया ।

उन्होनें लिखा "भारत में कला विद्यालयों का सच्चा कार्य यूरोपियन तरीकों एवं आदर्शों का समावेश और प्रचार करना नहीं है, अपितु भारतीय परम्परा के टूटे हुये सम्पर्क–सूत्रों को बटोरना तथा उन्हें शक्तिशाली बनाना है ।

राष्ट्रीय संस्कृति के अभिन्न अंग के रूप में भारतीय कला के विचार को मूर्त करना है तथा भारतीय शिल्पियों को जनगण के जीवन तथा चिंतन के अनुरूप ढालना है । सन् 1907 में कलकत्ता में इण्डियन सोसायटी ऑफ ओरिएण्टल आर्ट की स्थापना हुयी । इसमें भी भारतीयता के पक्षधारों नें भारतीय कला परम्परा को पुष्ट करने तथा कला के विकास का बीड़ा उठाया ।

इसी काल में भारत के अन्य क्षेत्रों में भी कुछ चित्रकार सक्रिय थे, जो भारतीय कला के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभा रहे थे । इनमें इन्दौर कला महाविद्यालय के दत्तात्रेय दामोदर, देवलालीकर, पंजाब के एस0जी0 ठाकुर सिंह तथा शोभा सिंह, गुजरात के रविशंकर रावल, राजस्थान के रामगोपाल विजय वर्गीय, गोवर्धनलाल जोशी, उत्तर प्रदेश के जगन्नाथ अहिवास वी0सी0 गुई, असम के भवेश चन्द्र सान्याल, श्री लंका के जार्ज कीट आदि के नाम मुख्य रूप से गिनाये जा सकते हैं । भारतीयता और भारतीय चित्रकला की पुर्नस्थापना में उक्त चित्रकारों का योगदान अविस्मरणीय है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अवनीन्द्र नाथ टैगोर तथा उनके शिष्यों नें बंगाल स्कूल के आन्दोलन को भारतीय कला के अन्तर्गत एक विशिष्ट स्थान दिलाया और निश्चित ही भारतीय कला मूल्यों को भी स्थापित किया किन्तु सन् 1915 ई0 में अवनीन्द्र नाथ का स्वर्गवास हो गया और इसी के साथ यह आन्दोलन प्रायः समाप्त हो गया ।

समस्या

भारतीय चित्रकला के इतिहास में पुनःरूत्थान काल का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना । उसके महत्व को प्रकाश में लाना तथा जो तथ्य प्राप्त होते हैं । उसके आधार पर निष्कर्षों को प्राप्त करना।

प्राक्कल्पना

भारतीय चित्रकला के इतिहास में पुनःरूत्थान काल का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना ।

"भारतीय चित्रकला के इतिहास में आधुनिक कला शब्द का सबसे पहला चरण बंगाल शैली या पुनःरूत्थान काल से ही प्रारम्भ होता है जिसकी विशेषताओं को भावी पीढ़ी के समक्ष प्रस्तुत करने के लिये पुनःरूत्थान काल का विश्लेषणात्मक अध्ययन की प्राक्कल्पना का निर्माण किया गया है ।

सैद्धान्तिक आधार

ऐतिहासिक अनुसंधान पद्धति की सहायता से शोध के प्रति निष्कर्षों को प्राप्त करना जिसमें प्राप्त द्वितीय स्त्रोत की सहायता से प्राक्कल्पना की पुष्टि करना व उद्देश्य को प्राप्त करना ।

संदर्भित शोध की उपाघ्येता

आधुनिक भारतीय कला का प्रारम्भ बंगाल शैली से ही माना जाता है क्योंकि इस शैली की पृष्ठभूमि बंगाल रही है । इसलिये इसे बंगाल शैली के नाम से पुकारा गया है । भारतीय चित्रकला का महत्व ब्रिटिश शासन व संस्कृति के प्रभाव स्वरूप कम होने लगा था । तत्कालीन समाज में पाश्चात्य संस्कृति की चमक आम जीवन से लेकर हमारी संस्कृति व कला पर भी हावी होने लगी थी।

जिसको सर्वप्रथम ई0वी0हैवेल नें समझा व विरोध स्वरूप भारतीय कला को सम्मान व संरक्षण के लिये पाश्चात्य कला के अनुकरण पर रोक लगायी ।

इसके अन्तर्गत अवनीन्द्रनाथ नें सहयोग प्रदान करते हुये इसे एक नयी दिशा व पहचान दिलाने में अपना पूरा योगदान दिया । इसके बाद इस शैली का प्रचार व प्रसार में अन्य कलाकार भी जुड़ गये जिन्होनें इस शैली को पूरे भारत में विभिन्न स्थानों पर जाकर उसका प्रचार–प्रसार व विकास करने में अपना पूर्ण योगदान दिया। इसके अन्तर्गत इस विषय का इतना विकास होने के बाद भी वर्तमान समय में इसका महत्व समाप्त होता जा रहा है तथा इसके (वाश) तकनीक में चित्रकारों का रूझान भी कम हो गया है ?

इसे पुनः संज्ञान में लाना व इसक महत्व को प्रकाशित करना ही मेरा उद्देश्य है।

शोध के उद्देश्य

मेरे शोध का उद्देश्य भारतीय चित्रकला के इतिहास में पुनःरूत्थान काल का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर उससे सम्बन्धित तथ्यों को लेकर निष्कर्ष को प्राप्त करना है

1. पुनःरूत्थान काल का परिचय ।
2. पुनःरूत्थान काल से सम्बन्धित भौगोलिक व सामाजिक दृष्टि से अध्ययन करना ।
3. भारतीय चित्रकला के इतिहास में बंगाल शैली का महत्व का अध्ययन करना है ।

वर्तमान समय में शोध की प्रासंगिकता

इस शोध की मुख्य प्रासंगिकता यह है कि पुनःरूत्थान शैली या बंगाल शैली की तकनीक, विशेषताओं व उसके कलात्मक तथ्यों को प्रकाश में लाना व वर्तमान समय में 'वाश' पद्धति को संरक्षण व संवर्धन प्रदान करना है ।

भारतीय आधुनिक चित्रकला का इतिहास इसी शैली से ही प्रारम्भ होता है जिसका श्रेय ई0 वी0 हैवल व अवनीन्द्रनाथ को जाता है – जिन्होनें विस्मृत होती हुई

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-10* June- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय कला की आत्मा में पुनः प्राण का संचार करने का प्रयास किया । इस विषय को लेकर रहमान राणा व तलाज शाकिल नें शोध कार्य किया है । इस विषय को और बेहतर ढ़ंग से प्रस्तुत करना ही मेरा उद्देश्य है ।

शोध प्रविधि

1. ऐतिहासिक
2. सर्वेक्षण विधि

उपयुक्त प्रस्तावित उद्देश्यों में प्राप्त करने हेतु जिन उपकरण, संसाधन व विधि का सहयोग लिया गया है व निम्नवत् है :–

उपकरण

स्त्रोत (द्वितीय)

1. कम्प्यूटर
2. उपलब्ध साहित्य
3. वेवसाइट
4. पत्र पत्रिकायें

प्रदत्तों का विश्लेषण

भारतीय कला जब अपने अस्तित्व को छोड़ देने के कगार पर थी तब ई0वी0 हैवेल नें 1884 ई0 में ''मद्रास कला विद्यालय'' के प्राचार्य पद पर रहकर संबल प्रदान किया और संसार का ध्यान 'भारतीय कला और संस्कृति की ओर' आकर्षित किया । सन् 1896 ई0 में वे मद्रास कला विद्यालय से कलकत्ता आर्ट स्कूल के प्रिंसिपल बने और इन्हीं के सहयोग से एक नवीन कला आन्दोलन का सूत्रपात हुआ जिसने भारतीय कला को पुनः स्वतंत्र पहचान दिलाया ।

उनका मानना था कि भारतीय कला आत्मा के अधिक निकट है । और इससे स्थूल जगृत की अपेक्षा शाश्वत सत्यता का प्रदर्शन होता है ''जबकि पाश्चात्य कला में इसके विपरीत भौतिकता के निकट हो ।

पर्सी ब्राउन और डॉ0 आनन्द कुमार स्वामी नें भी भारतीय कला के आदर्श गुणों के प्रचार प्रसार में पूर्ण सहयोग दिया ।

कला समीक्षक डॉ0 मुल्कराज आनन्द का मत है कि हैवल नें ब्रिटिश कला पद्धति को हटाकर जो भारतीय पारम्परिक कथानकों एवं शैली के आधार पर कला शिक्षण आरम्भ करवायें वे भारतीयों को कला माध्यम से प्रेरित करने में सफल भी हुये ।''

मनोहर कौल–''ट्रेन्ड्स इन इंडियन पेंटिंग, दिल्ली पृ0 108।

सन् 1854 ई0 में कलकत्ता कला विद्यालय सन् 1850 ई0 में मद्रास कला विद्यालय 1857 में मुम्बई में कला विद्यालय तथा 1875 ई0 में लाहौर में कला विद्यालयों की स्थापना हुई । जिसमें ब्रिटिश शासक का प्रभाव होने के कारण पाश्चात्य शैली के आधार पर कला शिक्षा प्रदान की जाती थी ।

अवनीन्द्रनाथ ठाकुर की सहायता से भारतीय चित्रकला शैली में अनेक प्रयोग हेतु ई0वी0 हैवेल नें भारतीय कला के यश में इण्डियन स्कल्पचर एण्ड पेटिंग **(Indian Sculpture and Painting)** इण्डियन आर्किटेक्चर **(Indian Architecture)** और आइडिअल्स ऑफ इण्डियन आर्ट **(Ideals of Indian Art)** नाम पुस्तकों को प्रकाशित किया, साथ ही भारतीय कला क कलात्मक गुणों के विरूद्ध प्रचारित पाश्चात्य विचारों को भ्रामक बताया ।

इसके विरोध में भी कई विद्वानों नें व लेखकोने अपने विचार प्रकट किये, जिसमें डब्ल्यू0 जी0 आर्चर महोदय नें इसके विपरीत 'इण्डियन एण्ड मॉडर्न आर्ट **(Indian and Modern Art)** में ई0वी0 हैवेल के उक्त विचारों को गलत माना। हैवेल नें भारतीय कलाकारो को पाश्चात्य कला क अनुकरण के बजाय, अपने अतीत हो देखो और चित्र बनाओ संदेश दिया ।

विनोद बिहारी मुखर्जी, विश्वभारती त्रैमासिक – 25 रजत जयंती अंक पृ0 14।

इस प्रकार ई0वी0 हैवल नें भारतीय लघु चित्रों, प्राचीन मूतिशिल्पों तथा अन्य कलाकृतियो की समालोचला करते हुये अपनी मौलिक कल्पना एवं विवेचना शक्ति को काम में लिया और उसे 'नये शब्दों' 'नई भाषा' से समृद्ध किया । कला समीक्षा को भी नये आयाम दिये जिससे दर्शकों एवं पाठकों के सामने उसका महत्व दर्शा सके ।

वी0आर0 नारला0 हैवल, जिन्होनें घोर बाधाओं का सामना करके भारतीय कला की सेवा की, आकृति अगस्त–सितम्बर 1966, पृ0 14–16।

डॉ0 ग्रियसने की भाँति ही, हैवल नें अंग्रेज होने के बावजूद भारतीय छात्रों को पश्चिमी कला के प्रभाव का त्याग करने को कहा । उन्हें भारतीय संस्कृति के गुणों को अपनाने के लिये प्रेरित किया ।

प्रेम चन्द गोस्वामी : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का संक्षिप्त इतिहास, जयपुर, 1999 पृ0 58–59।

लार्ड ब्रुक नें यहाँ एक कला वीथिका की स्थापना की। 1877 ई0 में ऐतिहासिक पत्रिका भारती का आरम्भ हुआ, जिसके माध्यम से पुनरूत्थान सम्बन्धी विचारों का आरम्भ हुआ। 1902 के आरम्भ में जापान से ओकाकुरा आये, जिनका परिचय सिस्टर निवेदिता नें कलकत्ता के जागरूक वर्ग से कराया। इसके पश्चात् जापान के दो कलाकार याकोहामा तथा हिसीदा आये। ओकाकुरा की पुस्तक **'आइडियल्स आफ द ईस्ट'** नें भारतीय प्रबुद्ध वर्ग को विशेषतया प्रभावित किया । सन् 1905 में बंगाल के विभाजन से देश में चारों ओर आग फैल गयी । परन्तु फिर कला जगत में भारतीय मूल्यों को स्थापित करने का कार्य चलता रहा । ई0वी0 हैवेल नें गगनेन्द्र के साथ मिलकर सन् 1907 ई0 में इण्डियन सोसाइटी ऑफ ओरियण्टल आर्ट की स्थापना की । सन् 1908 ई0 में इसके तत्वावधान में एक प्रदर्शनी आयोजित की गयी जिसमें अवनीन्द्र नाथ टैगोर, शैलेन्द्र नाथ, वेंकटप्पा, नन्दलाल बोस तथा असित कुमार हल्दार आदि नें उत्साह पूर्वक प्रतिभागिता की। इन सभी कलाकारों के प्रयास स्वरूप स्वदेशी कला की खोज हुयी जो पूर्णतया भारतीय परम्पराओं पर आधारित थी। इन कलाकारों नें अवनीन्द्र नाथ टैगोर की अध्यक्षता में अजन्ता, राजपूत मुगल आदि चित्रों का अध्ययन करके बंगाल चित्रशैली के विकास में सहयोग दिया । इसी समय लेडी हरिंघम भारत आई। उन्होनें नन्दलाल बोस, असित कुमार हल्दार आदि कलाकारों से अजन्ता और बाघ की प्रतिकृतियाँ बनवायी और उन्हें इण्डिया सोसाइटी लंदन में प्रकाशित कराया जिससे भारतीय कला का आदर्श रूप सम्मुख उपस्थित हो

सके । आनन्द कुमार स्वामी भी भारतीय चित्रों को विदेश ले गये और प्रदर्शित किया ताकि भारतीय कला को प्रसिद्धि मिल सके ।

इनके अनुसार ''कलकत्ता के चित्रकारों नें जिन विषयों को चुना है । उन्हें इतिहास, रोमांस और महाकाव्यों, पुराणों, धार्मिक साहित्य और किस्से कहानियों से तथा अपने आस–पास के लोगों के जीवन से लिया गया है । इनका महत्व उनकी विशिष्ट भारतीयता में निहित है।''

भारत के सभी प्रान्तों में उस समय बंगाल एक जागरूक प्रान्त था, जिसने प्रत्येक क्षेत्र में अपने पग आधुनिकता की ओर अग्रसर किये। बंगला की राजधानी कलकत्ता एक ऐसा नगर था जहाँ उद्योग की दृष्टि से सम्पन्नता थी। इसी कारण यहाँ की संस्कृति भी सभ्य एवं पुष्ट होने के कारण साहित्य, संगीत, कला, प्रकाश चलचित्र, मंच नाट्य आदि का विकास हो रहा था। यहीं साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रतिभा सम्पन्न एक ऐसा अभिजात्य परिवार था जो कला एवं साहित्य सम्बन्धी विभिन्न गतिविधियों में रूचि लेता था। इस परिवार के अनेक सदस्य आगे बढ़कर समाज के प्रत्येक क्षेत्र में बदलाव लाये। इसके अतिरिक्त राजा राममोहन राय नें 'ब्रह्म समाज' की स्थापना कर उपनिषद के सारगर्भित विचारों को जन साधारण तक पहुँचाने का प्रयास किया। रवीन्द्रनाथ टैगोर, केशव चन्द, ईश्वर चन्द विद्यासागर, अवनीन्द्र नाथ आदि नें साहित्य तथा कला के जागृत मूल्यों को पुनःस्थापित करने का प्रयास किया।

बंगाल उस समय पुनःरूत्थान की कला का उद्गम स्थल बना । बंगाल शैली के प्रमुख कलाकार अवनीन्द्र नाथ टैगोर तथा उनके शिष्य नन्दलाल बोस, असित कुमार हल्दार, मजूमदार, देवीप्रसाद राय चौधरी आदि थे । अवनीन्द्र नाथ एक प्रतिभा सम्पन्न कलाकार थे । उन्होनें अपने शिष्यों को इस प्रकार शिक्षित किया कि उनमें अधिकतर भारत के प्रमुख महाविद्यालयों के अध्यक्ष बनकर नियुक्त हुये। लखनऊ में असित कुमार हल्दार, शान्ति निकेतन में नन्दलाल बोस, लाहौर में समनेन्द्रनाथ गुप्त, जयपुर में शैलेन्द्र डे, मैसूर में के0 वेंकटप्पा तथा मद्रास में डी0पी0 राय चौधरी नें कार्यभार सम्भाला। बंगाल शैली की जो प्रथम लहर कलकत्ता में आरम्भ हुयी थी वह अवनीन्द्र नाथ के शिष्यो के माध्यम से भारत में चारों ओर प्रस्तारित हो गयी। बंगाल शैली के चित्रों में अजन्ता के चित्रों के समान लायात्मकता है। यही कारण है कि आकृतियों में भी कोमलता के दर्शन होते हैं। चमकीले रंगों के स्थान पर कोमल रंग है जिन्हें ''वाश'' पद्धति में लगाया गया है। अवनीन्द्र नाथ भारत में बंगाल स्कूल के नायक माने जाते हैं। जिन्होनें यूरोप, चीन, जापान तथा भारत की शैलियों की प्रेरणा स्वरूप बंगाल शैली का सृजन किया।

कलाकारों के अतिरिक्त समीक्षकों नें भी भारतीय कला के विकास में सहयोग किया, जिसमें आनन्द कुमार स्वामी और ई0वी0 हैवेल का नाम प्रमुख रूप से माना जाता है । अपने दिव्य एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण इन्होनें भारतीय कला जिसे अंग्रेजों नें निकृष्ट बना दिया था, की श्रेष्ठता सिद्ध कर दी और नव्य कलाकारों को परामर्श दिया कि पाश्चात्य शैली के आधार पर दी जाने वाली शिक्षा उनकी सृजन प्रतिभा को विकसित नहीं कर सकती । इंग्लैण्ड के अधिकारियों को जब पता चला तो उन्होनें हैवेल पर अनेक आरोप लगाये और उनके विरूद्ध भ्रामक विचार कर उनके प्रभुत्व को समाप्त करने का प्रयास किया गया, किन्तु वह अडिग रहे और अपने लेखों के माध्यम से भारतीय कला सम्पदा को व्याख्यायित करने का प्रयास करते रहे ।

ओ0सी0 गाँगुली नें रूपम का सम्पादन किया । इसी दौर में उन्होनें घोषणा की कि वह फोटोग्राफ जैसे दृश्य से दूर रहेंगे और प्रत्येक वस्तु का अपनी आन्तरिक दृष्टि से चिन्तन कर उसे चित्राँकित करेंगे क्योंकि यह आन्तरिक चिन्तन व्यक्ति को जीवन के भौतिक लक्ष्यों से दूर हटाकर सौन्दर्य और रूमानियत के विरल संसार में ले जाता है ।

इसी के साथ आनन्द कुमार स्वामी नें सन् 1913 ई0 में अपनी प्रकाशित पुस्तक 'कला और स्वदेशी' में घोषणापत्र लिखा जो तत्कालीन कला विद्यालयों में विशेष सराहनीय रहा । इसमें उन्होनें लिखा 'भारत में कला विद्यालयों का सच्चा कार्य यूरोपियन तरीकों एवं आदर्शों का समावेश और प्रचार करना नहीं है, अपितु भारतीय परम्परा के टूटे हुये सम्पर्क–सूत्रो को बटोरने तथा उन्हें शक्तिशाली बनाना है । राष्ट्रीय संस्कृति के अभिन्न अंग के रूप में भारतीय कला के विचार को मूर्त करना है तथा भारतीय शिल्पियों के जन–गण के जीवन तथा चिन्तन के अनुरूप ढ़ालना है।''

बंगाल शैली में पौराणिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, ग्रामीण, प्राकृतिक नगरीय आदि प्रायः सभी विषयों को चित्रित किया गया । प्रसिद्ध साहित्यिक ग्रन्थों में मेघदूत, चित्राँगदा आदि को चित्रांकित किया गया । विभिन्न अधिवेशनों में प्रचार–प्रसार हेतु पोस्टर भी बनाये गये । दैनिक जीवन के दृश्यों में श्रमिक, पनिहारिन, भिखारी आदि का मार्मिक चित्रण किया गया है । बंगाल शैली के इन चित्रों में अंकित रूपाकारों में अतिशय लयात्मकता है जो कलाकार के सधे हुये हाथों के परिणाम को स्पष्ट प्रतिगोचर करती है । चटक रंगों के स्थान पर कोमल वर्ण सौष्ठव चित्रों में एक – एक पृथक वातावरण प्रस्तुत करता है । आनन्द कुमार स्वामी के शब्दों में –

''कलकत्ता के चित्रकारों नें जिन विषयों को चुना है उन्हें इतिहास, रोमान्स और महाकाव्यों, पुराणों, धार्मिक साहित्य और किस्से–कहानियों से तथा अपने आस–पास के लोगों के जीवन से लिया गया है । उनका महत्व इनकी विशिष्ट भारतीयता में निहित है ।''

पुनरूत्थान कला की विशेषतायें

1. **भित्ति चित्रण का प्रभाव –** पाश्चात्य के प्रभाव को नकार कर बंगला के स्कूल के कलाकारों नें भारतीय भित्ति चित्रण को प्रेरणा स्वरूप माना । बोस तथा हल्दार जैसे कलाकारों नें अजन्ता तथा बाद्य के चित्रों की अनुकृतियाँ बनायी, जिससे भित्ति चित्रों की अधिकतर विशेषतायें बंगाल शैली के चित्रों में समाविष्ट हो गयी हैं ।
2. **विषय –** बंगाल शैल के प्रेरणा स्त्रोत चूँकि भारतीय भित्ति चित्र एवं लघु चित्र थे, इसलिये उन्हीं के समान

बंगाल शैली में भी ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक तथा पौराणिक आदि सभी विषयों को स्थान मिला । ऐतिहासिक विषयों में बुद्ध और सुजाता तिष्यरक्षिता, धार्मिका चित्रों में महाकाली, शिव–पार्वती, राधा–कृष्ण, साहित्यक चित्रों में मेघदूत आदि विषयों को चित्रित किया गया है । दैनिक जीवन के चित्रों में भिखारी, पनिहारिन आदि का चित्रण कुशलता पूर्वक किया गया है ।

3. **वर्ण सौष्ठव –** बंगाल शैली के चित्रों का वर्ण सौष्ठव कोमल एवं मनमोहक है । यदि कहीं चमकदार रंगों का प्रयोग है तो उसे भी इस प्रकार मिश्रित तान के माध्यम से लगाया है कि उनमें भड़कीलापन नहीं है । वर्णों की सुन्दर आभा से एक सामंजस्यपूर्ण वातावरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।
4. **छाया प्रकाश –** यद्यपि बंगाल के स्कूल के कलाकारों नें पाश्चात्य चित्र शैलियों का अन्धानुकरण छोड़ दिया किन्तु छाया–प्रकाश का प्रभाव इस नई समन्वित शैली में चलता रहा । कला के विषय यद्यपि धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक आदि है तथापि अंकन में पाश्चात्य प्रभावों को आवश्यकतानुसार कलाकार नें अपनाया है ।
5. **मुगल तथा राजस्थानी चित्र शैली का प्रभाव –** अजन्ता एवं बाद्य भिन्ति चित्रों के साथ–साथ मुगल तथा राजस्थानी चित्रों की लयात्मक कोमल आकृतियों, कोमल वर्ण नियोजन तथा अलंकारिकता नें बंगाल स्कूल को अत्यंत प्रभावित किया ।
6. **मानवाकृतियाँ –** मानवाकृतियाँ अतिशय कोमल एवं लयात्मक हैं, किन्तु शरीर रचना सिद्धान्तों के नियमों का पूर्ण परिपाक उनमें दिखायी देता है।
7. **वाश एवं टेम्परा पद्धति –** आधुनिक युग में प्रयुक्त होने वाली वाश शैली बंगाल स्कूल की देन है । इसमें रंग की विविध आभाओं को लगाकर ''वाश'' के माध्यम से इस प्रकार का प्रभाव उत्पन्न किया गया, जिसमें चित्र का सम्पूर्ण वातावरण शान्तमय लगता है । अवनीन्द्र नाथ, शारदाचरण, चुगताई आदि के चित्र वाश पद्धति के उत्तम दृष्टान्त है ।

   वाश के साथ–साथ चित्रकारों नें टैम्परा का भी प्रयोग किया है । नन्दलाल बोस, मजूमदार, यामिनी राय जैसे कलाकारों नें टेम्परा में कार्य किया ।
8. **अन्य शैलियों का प्रभाव –** भारतीय चित्र शैलियों से प्रेरणा के साथ–साथ बंगाल स्कूल के कलाकारों के चित्रों में अप्रत्यक्ष रूप से चीन, जापान, ईरान तथा कहीं–कहीं यूरोप की कला का प्रभाव है । प्रत्येक कलाकार की शैली पृथक विशेषताओं का विकास करती है ।
9. **रेखांकन –** इन चित्रों में अंकित प्रत्येक रूपाकार सुकोमल, सुदृढ़, लयात्मक, भावपूर्ण रेखाओं से रचित है, जिस पर अजन्ता की छाप स्पष्ट लक्षित होती है। इन कलाकारो द्वारा विद्यालय से बाहर जाकर प्रकृति पशु–पक्षी आदि के चित्र बनाये जिसका आधार इन कलाकारों का कुशल रेखांकन था ।

निष्कर्ष

यह आन्दोलन भारतीय चित्रकला की प्राचीन परम्परा को जागृत करने और उनका वर्तमान काल में प्रचार करने में महत्वपूर्ण रहा । इसमें तो सन्देह ही नहीं कि इन आन्दोलनों नें भारतीय कला को उचित जीवन देकर पथ प्रदर्शन ही नहीं किया बल्कि विश्व कला विद्वानों समालोचकों और कला विद्यार्थियों की दृष्टि में सम्मान स्थापित किया ।

सुझाव

ब्रिटिश शासन के प्रभाव के फलस्वरूप भारत में भारतीय कला का इतिहास कहीं खो सा गया था । पाश्चात्य कला का प्रभाव इस प्रकार से हमारी संस्कृति पर हावी हो रही थी कि हम अपने इतिहास की गौरवमय कला संस्कृति को पीछे छोड़ आधुनिकता के नाम पर पाश्चात्य का अनुकरण कर रहे थे जो कि केवल भौतिकता से ही सम्बन्धित थी । इसका आभास हमें ई0वी0 हैवेल व अवनीन्द्रनाथ नें कराया उन्होनें आध्यात्मिक व आन्तरिक जगत से जुड़ी हुई कला से हमें रूबरू करा जिसका उद्देश्य भारतीय आत्मा को आत्मसात करना भी था । यह दार्शनिक कला है जिसका सीधा सम्बन्ध हमारे दर्शन से है ।

मेरा सुझाव यही है कि हमें पुनः इस दर्शन को आत्मसात कर इस शैली की नव संचार प्रदान करना है जिससे ये हमारी भावी पीढ़ियों को भी मार्ग दर्शन प्रदान करें । एक नये प्रयास के माध्यम से इस शैली को पुनः जागृत किया जाये, वाश पद्धति से पौराणिक विषयों के साथ–2 आधुनिक विषयों को लेकर भी चित्रों का निर्माण किया जाये जिससे इस स्थूल कला को पुनः जीवन मिल सके ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *भारत की समकालीन कला – एक परिप्रेक्ष्य – प्राणनाथ मागो, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, ए–5, ग्रीनपार्क, नई दिल्ली, 2006 ।*
2. *समकालीन भारतीय कला – डा0 ममता चतुर्वेदी, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2008 ।*
3. *आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ – डा0 प्रेमचन्द्र गोस्वामी, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2008 ।*
4. *भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास – डा0 रीता प्रताप, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2008 ।*
4. *भारतीय चित्रकला – वाचस्पति गैरोला, मित्र प्रकाशन इलाहाबाद, 1963 ।*
5. *भारतीय कला का विकास : डा0 राधामल मुखर्जी, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद 1964 ।*
6. *भारत की चित्रकला : राम कृष्ण दास, ना0प्र0 सभा, वाराणसी, 1939 ।*
7. *भारतीय आधुनिक कला – किरण प्रदीप, कृष्णा प्रकाशन मीडिया प्रा0 लि0 कृष्णा हाउस, शिवाजी रोड, मेरठ ।*

संदर्भ कला पत्र/पत्रिकायें

1. *कला दीर्घा*
2. *समकालीन कला पत्रिका*
3. *आकृति राजस्थान ललित कला अकादमी*